इतिहास अध्यापन की जड़ता

ब्रूस वानस्लेडराइट

यह लेख इतिहास शिक्षण के प्रचलित तरीकों पर टिप्पणी करते हुए बताता है कि इतिहास शिक्षक उसी तरह शिक्षण करवाते हैं जैसे उन्हें करवाया गया होता है। इतिहास को व्याख्यान शैली में पढ़ाने की आलोचना करते हुए बताता है कि इतिहास पढ़ाने या बताने का आशय यह नहीं है कि शिक्षार्थी इतिहास सीख रहे हैं।

महाविद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओं को इतिहास पढ़ाना, एक विस्तृत अर्थ में प्राथमिक स्कूल के बच्चों को इतिहास पढ़ाना है। इतिहासकार इस समझ से पढ़ाने के अभ्यस्त नहीं हैं। अकादमिक जगत में इतिहास शिक्षण व्यापक औपचारिक शिक्षा क्षेत्र का एक और ऐसा उद्यम है, जिसमें विषय और उसके अनुशासनिक उपकरण सीखे (या नहीं सीखे) जाते हैं। जिन तरीकों से इतिहासकार कार्य करते हैं, उन्हें समझने से इतिहास अध्यापन के बारे में व्यवस्थित ढंग से पता चलता है। वह व्यवस्था और उसका सिखाने का ढांचा आगे की चर्चा के केन्द्र बिंदु हैं।

किसी भी कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहासकार भावी इतिहास अध्यापकों को पढ़ा रहा होता है। हो सकता है, उनमें से बहुत कम ही अपनी भावी योजना के बारे में जानते हों, चाहे वे पहले साल के शिक्षार्थी हों दूसरे साल के या जूनियर के हों। उनमें से कुछ प्रारंभिक स्कूल के शिक्षक बन जाएंगे और कुछ माध्यमिक के। इतिहास पढ़ने आने वालों के इतने बड़े समूह में बहुत कम ही हैं जिन्हें प्राथमिक स्कूल में इतिहास पढ़ाना पसंद हो। ये भावी अध्यापक प्राथमिक स्कूल में पढ़ाने की कोई स्पष्ट इच्छा नहीं दर्शाते। फिर भी वे इतिहास पढ़ते हैं और पढ़ाने वाले इतिहासकार की नजरों से लगभग ओझल ही रहते हैं। ऐसी परिस्थितियां यह समझने में मदद करती हैं कि क्यों इतिहासकार बिरले ही अपनी शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका के बारे में सोचते हैं। जो भी हो, अगर इतिहासकार महाविद्यालयों में पढ़ा रहे हैं, तो वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वे भावी अध्यापक बनाने में मदद कर रहे हैं और इसलिए वे पेशेवर इतिहासकार के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षक भी हैं।

इसका महत्त्व कैसे और क्या है ? यह बताने की जरूरत नहीं पर फिर भी दोहराना पड़ेगा कि अध्यापक वैसे ही पढ़ाते हैं, जैसे उन्हें पढ़ाया गया। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि उन्हें इतिहास कैसे पढ़ाया गया ?

इतिहास अध्यापन के बारे में पिछले 30 सालों में हुए अध्ययन इस लिहाज से शिक्षाप्रद हैं। इतिहास के अध्यापकों से जब अध्यापन की तैयारी के बारे में पूछा जाता है तो पता चलता है कि उन्होंने इसका कॉलेज स्तर के पाठ्यक्रमों के जरिए अनुभव पाया है, इतिहासकारों के उन व्याख्यानों से जो उन्हें एकांत और छिपे हुए कमरों में दिए गए। जहां उन्हें अतीत के विस्तृत क्षेत्र को पार करने के लिए, कॉलेज शिक्षा में चिरकाल से सम्मानित युगों व कालों की श्रेणियों के ऐतिहासिक ज्ञान का प्रसाद दिया जाता है। संक्षेप में, ये पाठ्यक्रम पढ़ाने वाले इतिहासकार अतीत की कहानियों के जरिए अपने छात्रों का मनोरंजन करते हैं और यह मानते हैं कि उन छात्रों को कहानियां सुनाने से वे कहानियों के बारे में जान जाएंगे। समय की कमी के कारण, शायद ही कभी ये भावी अध्यापक यह जान पाते हैं कि यह ऐतिहासिक कहानी कैसे उपजी। बिरले ही इतिहासकार पर्दा उठाकर उन शास्त्रीय बहसों और दलीलों की ओर इशारा करते हैं, जिनसे अतीत के विशाल विस्तार से स्वीकृत इतिहास बनाने की मशक्कत इस पेशे में की गई है।

जब तक कि ये भावी अध्यापक स्नातक स्तर पर न जाएं (कम ही ऐसा होता है।

लेखक परिचय : मेरीलैण्ड विश्वविद्यालय, कॉलेज पार्क के पाठ्यचर्या और निर्देशन विभाग में इतिहास और सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के अध्यक्ष और प्रोफेसर हैं। पूर्व में इतिहास के शिक्षक रह चुके हैं।

भावी इतिहास शिक्षक अपने स्नातक इतिहास कोर्स से चार तरह की सीख निकाल सकते हैं। इनमें से दो यहां बताने लायक हैं- पहला, कि समझाते हुए पढ़ाने की विधियां, विशेषकर व्याख्यान, सबसे बेहतर है। सभी बड़े लोग इनका इस्तेमाल करते हैं। और दूसरा कि, शुरुआती पाठों में, शिक्षार्थियों की बड़ी कक्षाओं को पहले व्याख्यान सुनने चाहिए और फिर चर्चा के लिए छोटे समूहों में बंट जाना चाहिए। यदि एक अध्यापक के पास तीस छात्रों की कक्षा भी हो तो भी उसे ज्यादातर समय व्याख्यान में ही बिताना चाहिए। फेंटन ने फिर अपना निष्कर्ष निकाला- इन सभी सीखों में से हर एक भावी शिक्षकों को प्रभावहीन बनाता है। शिक्षकों को बहुत बेहतरीन विषयवस्तु वाले पाठ्यक्रम मिलने चाहिए। पर विषयवस्तु अकेले में पर्याप्त नहीं है। मुझे फेंटन चेतावनी देते दिखते हैं कि हम जिस तरह से इतिहास शिक्षकों की तैयारी को देखते हैं, उसके शैक्षणिक और शिक्षणशास्त्रीय बुरे परिणाम होंगे। यह विडम्बना ही है कि इसके 40 साल बाद भी इतिहासकार लोग जोर-शोर से स्नातक के शिक्षार्थियों की इतिहास के बारे में, अज्ञान की शिकायत करते मिलते हैं।

सवाल यह है कि किस मुकाम पर आकर इतिहासकार भावी इतिहास शिक्षकों की पीढ़ियों की तैयारी में अपनी जिम्मेदारी को इतना समझेंगे कि अपनी शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों पर पुनर्विचार करेंगे।

कुछ संकेत ऐसे मिले हैं जिससे लगता है कि वर्तमान में कुछ संभावना हो सकती है। अमरीकी इतिहास शिक्षण के अनुदान कार्यक्रम के बढ़ने के साथ ज्यादा से ज्यादा इतिहासकार इतिहास पढ़ाने वाले शिक्षकों से आमने-सामने होने लगे हैं। बिलाशक इससे शिक्षण के तरीकों के बारे में कुछ आत्मावलोकन के आसार बनते हैं। इतिहासकार, जो कार्नेगी अकेडमी फॉर द स्कॉलरशिप ऑफ टीचिंग एण्ड लर्निंग के फेलो रहे हैं, उन्होंने हाल ही में इतिहास का आदर्श शिक्षणशास्त्र कैसा हो, इस विषय में विचारणीय प्रश्न उठाए हैं। इन इतिहासकारों ने इतिहास शिक्षण में विशेषज्ञता की बात उठाई है। उन्हें सुनने वाले लोग भी मिले हैं और सम्मानित ऐतिहासिक संस्थाओं जैसे अमेरिकन हिस्टॉरिकल एसोसिएशन के पत्रों में स्थान भी मिला है। हमने इतिहास शिक्षा विशेषज्ञता में भी वृद्धि देखी है जिसने हमें यह भी सिखाना शुरू किया है कि अर्थपूर्ण ढंग से इतिहास को सीखने और पढ़ाने का क्या अभिप्राय है। तब भी, मुझे चिन्ता होती है कि फेंटन के शब्द आज भी सच्चाई से गूंजते हैं। ऊपर इंगित कुछ रोचक अपवादों को छोड़कर हम उन्हें लगातार भुलाते आए हैं। यह अजीब बात है क्योंकि इतिहासकार इस बात पर गर्व करते हैं कि वे किसी चीज को विस्मृत नहीं करते।

जो पुरानी कहावत यह कहती है कि जब हम एक उंगली उठाते हैं तो तीन उंगलियां हमारी अपनी ओर होती हैं, यहां पूरी तरह लागू होती है। जब इतिहासकार अपने स्नातक छात्रों के अज्ञान की भर्त्सना करते हैं, वे असल में अपनी ओर भी साथ की साथ इशारा कर रहे होते हैं। इतिहास पढ़ाने के बारे में परवाह करने का अर्थ तब यह बनेगा कि इतिहास शिक्षकों को तैयार करने में इतिहासकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचाना जाए, इस समझ को गंभीरता से लिया जाए कि इस विषय को पढ़ाना और सीखना क्या होता है। साथ ही शिक्षा स्कूलों में लोगों के साथ संवाद करना कि कैसे एक अप्रभावी व्यवस्था को तोड़ा जाए जो शुरू से ही ज्यादातर ऐतिहासिक अज्ञान के निर्माण में योगदान देती है। ◆

भाषान्तर : सुमन

(अमेरिकन हिस्टोरिकल एसोसिएशन से साभार)

अतीत बोध

"अतीत के बारे में सभी लोग जानते हैं (किसी भी व्यक्ति की याददाश्त में दर्ज पुरानी घटनाओं को अतीत कहते हैं) क्योंकि सब लोग दूसरों के साथ रहते हैं। जिन समाजों का अध्ययन इतिहासकार करता है उन सबका अतीत होता है क्योंकि जिन उपनिवेशों पर बाहर से आकर लोग बसे हैं वहां बसने वाले लोग भी जिन समाजों से आए उनका लम्बा इतिहास था। किसी भी मानव समुदाय का सदस्य होने के लिए खुद अपने अतीत के संदर्भ में अवस्थित करना होता है, चाहे उस अतीत को खारिज करके ही। इसलिए अतीत मानव चेतना का स्थाई पहलू है। वह मानव समाज की तमाम संस्थाओं, मूल्यों और तरीकों का अभिन्न अंग है। इतिहासकार की समस्या यह होती है कि वह समाज में इस 'अतीत बोध' की प्रकृति का विश्लेषण करे और इसमें आए बदलावों को पहचाने।"

एरिक हॉब्सबाम ('इतिहासकार की चिन्ता' से अंश)